गया है। कभी-कभी भ्रमवश कृष्णभावनामृत को जड़ता समझ लिया जाता है। इस भ्रान्त धारणा वाला पुरुष तो प्रायः कृष्णनाम-कीर्तन के द्वारा पूर्णतया कृष्णभावनाभावित होने के लिए एकान्तवास भी करने लगता है। परन्तु कृष्णभावना के दर्शन में भलीभाँति शिक्षित हुए बिना एकान्त में भगवन्नाम-जप करना उचित नहीं है। ऐसा करने से अबोध जनता की तुच्छ अर्चना ही मिलेगी। अर्जुन भी कृष्णभावनामृत अथवा 'बुद्धियोग' का तात्पर्य यही समझा कि क्रियाशील जीवन से संन्यास ग्रहण कर एकान्त में तप-त्याग करना चाहिए। वस्तुतः कृष्णभावनामृत को हेतु बनाकर वह चतुरतापूर्वक युद्ध से उपरत हो जाना चाहता था। तथापि, निष्कपट शिष्य के रूप में उसने इस विषय को अपने गुरु श्रीकृष्ण के आगे रख दिया और अपने श्रेय-साधन के सम्बन्ध में उनसे जिज्ञासा की। उत्तरस्वरूप, भगवान् श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता के तृतीय अध्याय में 'कर्मयोग' अर्थात् कृष्णभावनाभावित कर्म की विस्तृत व्याख्या की है।

1.3

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्।।२।।

व्यामिश्रेण=अनिश्चित (दुविधापूर्ण); **इव**=से; **वाक्येन**=वचनों से; **बुद्धिम्**=बुद्धि को; **मोहयसि इव**=मोहित सी करते हैं; **मे**=मेरी; **तत्**=अतः (वह); **एकम्**=एक; **वद**=कहिये; **निश्चित्य**=निश्चय करके; **येन**=जिसके द्वारा; **श्रेयः**=यथार्थ लाभ को; **अहम्**=मैं; **आप्नुयाम्**=होऊँ।

अनुवाद

आपके अनिश्चित (दुविधापूर्ण) उपदेश से मेरी बुद्धि मोहित सी हो रही है। अतएव निश्चयपूर्वक वह एक साधन कहिये, जिससे मेरा कल्याण हो सके।।२।।

तात्पर्य

पूर्ववर्ती अध्याय में भगवद्गीता के उपक्रम के रूप में सांख्ययोग, बुद्धियोग , इन्द्रियनिग्रह, निष्काम कर्मयोग, साधक की स्थिति आदि का वर्णन आया है। परन्तु इन सब तत्त्वों का विवेचन व्यवस्थित रूप में नहीं किया गया। कल्याण-मार्ग के ज्ञान और उसके अनुसार कर्म करने के लिए अधिक सुनियोजित दिग्दर्शन अपेक्षित है। अतएव अर्जुन इन परस्पर सम्भ्रामक लगते तत्त्वों का स्पष्टीकरण चाहता है, जिससे साधारण मनुष्य भी उन्हें यथार्थ रूप में ग्रहण कर सकें। यद्यपि श्रीकृष्ण का ऐसा कोई प्रयोजन नहीं था कि वे अर्जुन को वाग्चातुरी से मोहित करते, परन्तु अर्जुन यह नहीं समझ सका कि कृष्णभावना की पद्धति वास्तव में क्या है—जड़ता (निष्क्रियता) अथवा सक्रिय भगवत्सेवा। इस प्रकार अपनी जिज्ञासा के माध्यम से अर्जुन उन सब जिज्ञासुओं के लिए कृष्णभावनामृत का पथ प्रशस्त कर रहा है, जो यथार्थ रूप में भगवद्गीता के रहस्य को धारण करने के अभिलाषी हैं।